जयपुर का तापमान | अधिकतम 23.9°c | न्यूनतम 7.4°c | सूर्यास्त आज शाम 06:01 बजे | सूर्योदय कल सुबह 07:17 बजे | 04:47 बजे चन्द्रोदय आज सुबह | 03:55 बजे चन्द्रास्त आज शाम | मौसम अनुम

स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप, जिम्मेदार अधिकारियों से जवाब तलब, आरएमएससी और अस्पताल प्रशासन आमने-सामने

दवा ही नहीं, 'लोकल फंड' भी गायब

जयपुर

jaipur@patrika.com

निःशुल्क दवा योजना के तहत पर्ची पर लिखी दवाओं में से 100 फीसदी तक पर अनुपलब्धता का ठप्पा लगाए जाने के बाद अस्पताल और राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन (आरएमएससी) एक दूसरे पर जिम्मेदारी डालने में जुट गए हैं। आरएमएससी का कहना है कि अधिकांश दवाइयां अस्पतालों को भेजी जा रही हैं, वहीं अस्पताल प्रशासन का कहना है कि कई बार मांग भेजे जाने के बावजूद आपूर्ति नहीं मिल रही।

यह हालत तो तब है जबकि इस योजना का बजट पहले की तुलना में करीब 25 फीसदी बढ़ा दिया गया है। सोमवार को राजस्थान पत्रिका में 'व्यवस्था ठप, सारी दवाओं पर अनुपलब्धता का ठप्पा' शीर्षक से समाचार प्रकाशित होने के बाद स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मच गया। उच्चाधिकारियों ने योजना से जुड़े अधिकारियों से जवाब तलब किए तो कई परतें स्वतः ही खुलती चली गईं।

राजस्थान पत्रिका फॉलोअप

पैसा भी बकाया

दवाओं की अनुपलब्धता की पड़ताल पर सामने आया कि उपलब्धता हर समय बनाए रखने के लिए गठित लोकल फंड भी गायब-सा हो गया है। सूत्रों के मुताबिक एसएमएस ने लोकल फंड के तहत खरीद कर ली, जिसका दवा कंपनियों का पैसा भी एसएमएस पर बकाया है।

यूं खुली परतें

ऐसी गड़बड़ी, मांग भेज दी शून्य : 2014-15 में राजस्थान मेडिकल सर्विसेज कॉरपोरेशन ने दवाओं की मांग की तो 542 की मांग को शून्य बता दिया गया। आरएमएससी के अधिकारियों ने फिर भी दवाओं की आपूर्ति भेजी। बाद में पता चला कि कम्प्यूटर में गड़बड़ी के कारण मांग शून्य भेज दी गई। हैरत की बात यह है कि कम्प्यूटर की गड़बड़ी को बिना देखे अस्पताल प्रशासन ने जस का जस आरएमएससी को भेज दिया।

अनुपलब्ध दवा लिखी ही क्यों? : नियम तो यह है कि ओपीडी में बैठे हर डॉक्टर के पास उस दिन काउंटरों पर उपलब्ध दवाइयों की सूची हो। ये इसलिए कि अनुपलब्ध दवाइयां नहीं लिखी जाएं। यदि कोई दवा जरूरी होने पर अनुपलब्ध होने के बाद भी लिखनी पड़े तो उसे लोकल फंड से खरीदकर उपलब्ध करवाए।

यह जांच जरूरी

- आरएमएससी से आपूर्ति पूरी तो मरीज तक जाने से कौन रोक रहा है?
- 100 फीसदी दवाओं तक पर अनुपलब्धता का ठप्पा किसके निर्देशों से लग रहा है?
- अनुपलब्धता का जुगाड़ किसने खोज निकाला?
- दवा नहीं मिलने से दवा माफिया का उद्देश्य पूरा हो रहा है। इसके लिए यह किसे मैनेज कर रहा है?

सब कम्प्यूटर में दर्ज

(एसएमएस अधीक्षक डॉ. मानप्रकाश शर्मा से सवाल-जवाब)

■ आरएमएससी दवाएं पूरी भेज रहा है, फिर मरीजों को अनुपलब्धता क्यों?

किसने कहा दवाएं पूरी आ रही हैं, वो झूठ बोल रहे हैं।

■ आपके यहां से 500 से ज्यादा दवाओं की मांग ही शून्य भेज दी?

ऐसा नहीं है, करीब 100 दवाइयां ही ऐसी हैं। आजकल तो कम्प्यूटर का जमाना है, एक-एक चीज का रिकॉर्ड हमारे पास है, कब कितनी मांग भेजी, हमारे दवा स्टोर प्रभारी पीएचएस के पास गए हैं, सारी बात बताने।

■ लोकल फंड का पैसा नहीं मिल रहा?

जितनी हो सकती है, लोकल फंड से खरीदकर दे देते हैं, प्रस्ताव तो हम भेजते ही हैं, अब मिले जब ना।

यहां से कोई कमी नहीं

(आरएमएससी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज कुमार नाग से बातचीत)

■ दवाओं की अनुपलब्धता पर स्थिति स्पष्ट करेंगे?

राज्य के विभिन्न जिला औषधि भंडार गृहों सहित जयपुर प्रथम जिला औषधि भंडार गृह पर अधिकांश दवाइयां उपलब्ध हैं। हम योजना पर पूरी मेहनत कर रहे हैं।

■ दवा काउंटरों पर दवा मरीजों को मिल क्यों नहीं रही?

कुछ दवाइयां अलग-अलग मात्रा में होती हैं। यदि एक मात्रा की दवा नहीं है तो डॉक्टर दूसरी उपलब्ध दवा की मात्रा लिख सकता है, यह व्यवस्था बनाने का काम अस्पताल प्रशासन का है।

■ होमोफीलिया जैसी कई जीवनरक्षक दवाइयां नहीं मिल रहीं?

हमने ये दवाइयां भी जितनी एसएमएस प्रशासन ने मंगवाई, उससे ज्यादा भेजी।

■ लोकल फंड हैं, फिर अनुपलब्धता का ठप्पा क्यों?

इसका जवाब देने के लिए मैं अधिकृत नहीं हूं।